RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 16 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 25 सितम्बर 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

नन्दामय हुआ पहाड़

कार्यालय प्रतिनिधि

पहाड़ इन दिनों नन्दामय बना हुआ है। उत्तराखण्ड में नन्दा को कुलदेवी, माँ, बेटी के रूप में मान्यता है। नन्दादेवी का प्रसिद्ध कौतिक अल्मोड़ा में शुरु हो चुका है। परम्परागत तरीके से मनाये जाने वाले इस कौतिक के लिये सभी को इन्तजार रहता है। नैनीताल और भवाली में भी नन्दादेवी मेले की धूम मची हुई है। कदली वृक्ष लाने, श्रृंगार से लेकर डोले तक का आयोजन श्रद्धापूर्वक हो रहा है। बागेश्वर जिला मुख्यालय में आयोजन को लेकर उत्साह है। इसी प्रकार रानीखेत में नन्दा उत्सव जारी है। चम्पावत में नन्दादेवी मेले के अलावा हल्द्वानी सहित कुछ स्थानों पर इस बार से इसकी शुरुआत की जा रही है। बताते चलें कि नन्दादेवी कौतिक के नाम पर सबसे पहले अल्मोड़ा का ही नाम आता है। वर्तमान में नैनीताल सहित अन्य स्थानों पर नन्दादेवी मेले के बजाय महोत्सव नाम से प्रचारित किया जा रहा है।

नन्दा महोत्सव के रूप में डीडीहाट में भी धूम मची हुई है। आयोजन समिति द्वारा इस अवसर पर प्रतिवर्ष झोड़ा-चांचरी प्रतियोगिता सहित सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाए जाते हैं। जोहार के मर्तोली स्थित माँ नन्दा की पूजा के लिये दूर-दराज से भक्तगण पहुँच रहे हैं। शरद ऋतु में होने वाले आस्था के इस संगम में अभी लगातार आयोजनों की झड़ी रहेगी।

पाठ्यक्रम में लोक संस्कृति शामिल हो

अस्कोट। उत्तराखण्ड सांस्कृतिक मंच ने प्रदेश सरकार से उत्तराखण्ड की लोक कला और लोक संस्कृति को विद्यालयी शिक्षा में शामिल करने की मांग की है। मंच के पदाधिकारियों का कहना है कि इससे न केवल राज्य की समृद्धशाली लोककला को और संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी स्वत: हस्तगत होती रहेगी बल्कि विलुप्ति के कगार पर पहुंच चुकी लोक विधाओं को सुरक्षित किया जा सकेगा। मंच के अध्यक्ष गोविन्द भण्डारी ने इस सम्बन्ध में सीएम को ज्ञापन भेजा है।

सुई में सूर्य षष्ठी मेला

लोहाघाट। ग्राम सभा सुई के खौसकांडे के अदित्य महादेव मन्दिर में सूर्य षष्ठी मेला विधि-विधान से सम्पन्न हुआ। सुई-बिशुंग के इस ऐतिहासिक मन्दिर में हर बार क तरह परम्परागत रूप से आयोजन हुए। चारद्योली मन्दिर के पुजारी मदन पुजारी सहित श्रद्धालुजन उपस्थित थे।

नन्दा की डोलियां भ्रमण में, त्रिशूल स्थापित

चमोली। नन्दा लोकजात यात्र के तहत नन्दा की डोलियां भ्रमण में हैं। डुंग्री, वंड पट्टी, दशोली, कमेड़ा, थराली, नन्दप्रयाग, सूना, नौरख सहित कई स्थानों पर डोली की पूजा-अर्चना हुई। श्री नन्दा राजराजेश्वरी के मुख्य पड़ाव गैरोलीपातल व वेदनी बुग्याल के बीच ऐतिहासिक डोलियाधार स्थान में 21 फीट ऊंचा एवं एक क्विंटल वजनी त्रिशूल को वैदिक विधि-विधान से स्थापित किया गया। जहाँ नन्दा भगवती एवं लाटू दवता के पंडित उमेश चन्द्र मिश्र थे।

नन्दा के दर्शन के लिये श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ रहा है। जगह-जगह देव डोलियों के आगमन पर लोग मनौती मांग रहे हैं। डोलियों के बैरासकुण्ड, किरूली और बेराधार प्रवास पर बड़ी संख्या में भक्तजन जुटे। नन्दा सिद्धपीठ कुरुड़ से चली नन्दा लोकजात यात्रा के तहत दशोली, बंड पट्टी व बधाण की उत्सव डोलियां लगातार अगले पड़ावों की ओर बढ़ रही हैं। बंड पट्टी में नन्दा उत्सव डोली रैंतोली के नन्दा मन्दिर में पूजा के बाद आगे बढ़ी। इस दौरान नन्दा के जागर भी सुनाई दे रहे हैं। थराली से प्राप्त सूचना के अनुसार बधाण की नन्दा देवी राजराजेश्वरी की उत्सव डोली धारातल्ला गाँव में प्रवास के बाद आगे को बढ़ी। यहाँ त्रिकोट, जोला, बुडजोला, सेरा-विजेपुर, टुंगरी के ग्रामीणों ने ढोल-नगाड़ों के साथ नन्दा से मनौती मांगी।

कोटभ्रामरी मेले

ग्वालदम/गरुड़। सुप्रसिद्ध कोटभ्रामरी मेले की भव्यता इस बार भी रही। छोटा जागरण के साथ शुरु हुआ मेला तीन दिन तक चला। कुमाऊँ गढ़वाल मण्डलों के श्रद्धालु यहाँ दूर-दराज से उपस्थित थे। यह प्राचीन व्यापारिक और सांस्कृतिक मेला है। यह राजराज यात्रा का पड़ाव स्थल भी है।

बारह वर्ष के अंतराल में छिपला केदार मेला

पि.हि. प्रतिनिधि

धारचूला। सीमान्त की ग्राम सभा जुम्मा में बारह साल के अन्तराल में इस बार छिपला केदार मेले का भव्य आयोजन हुआ। ग्राम के प्रमुख धन सिंह धामी सहित एक हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने 25 किमी की पैदल यात्रा कर छिपला केदार में यह उत्सव मनाया। देव पुजारियों ने पूरे विधि-विधान से बाबा छिपला केदार की पूजा की। धार्मिक अनुष्ठान के समय सभी लोग ब्रह्म कमल लेकर नौल मन्दिर पहुँचे। बारह वर्ष के अन्तराल में हुए इस मेले को लेकर लोगों में खासा उत्साह था। मुख्य पुजारी मानसिंह ने बताते हैं कि छिपला केदार मेला तीन साल में होता है लेकिन गाँव में किसी कारणवश इस बार 12 वर्ष बाद मेला हुआ है। इस दौरन मुख्य पुजारी मान सिंह, दीवानसिंह, जमन सिंह, सुन्दर सिंह, प्रेम सिंह, नन्दन धामी मुख्य रूप से थे।

बेरीनाग में ऋषि पंचमी मेला, अनुष्ठान और थिरकन

पि.हि. प्रतिनिधि

बेरीनाग। ऋषि पंचमी का मेला भव्य तरीके से मनाया गया। नाग मन्दिर में श्रद्धालुओं ने पूजा-पाठ के साथ ही सांस्कृति आयोजन में भागीदारी की। कलश यात्रा के साथ मेले की शुरुआत हुई। परम्परागत रूप से झोड़ा-चांचरी के खेल लगाए गए। पुरानी बाजार में प्रतिवर्ष की तरह दूर-दराज से उत्साही लोग जुटे और समूह नृत्यगीत में सम्मिलित हुए। रामलीला मैदान में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छोलिया नर्तकों सहित स्थानीय कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष हेम पन्त, व्यापार मण्डल अध्यक्ष राजेश रावत, नन्दन बाफिला, हरिप्रसाद लोहिया, रत्नाकर पाण्डे, हिमांशु पाठक, जीवन रावत, जीवन धानिक, जीवन पाठक, इन्द्र सिंह धानिक, विक्रम सिंह धानिक, डी.एल.शाह मुख्य रूप से उपस्थित थे।

ऐतिहासिक धरोहर और आस्था का महासंगम नन्दादेवी राजजात यात्रा

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

हिमालयी महाकुंभ श्री नन्दा देवी राजजात की शुरुआत यूं तो नन्दाधाम नौटी से मानी गई है, लेकिन सही मायने में यह निर्धारित तिथि से एक दिन पूर्व कांसुवा से शुरू हो चुकी होती है। इस दिन कांसुवा के राजकुंवर राज छन्तोली व चौसिंग्या खाडू (मेंढा) लेकर नौटी पहुँचते हैं। नंदाधाम नौटी में भगोती नन्दा की विधिवत पूजा-अर्चना के बाद से जात अगले दिन ईड़ाबधानी के लिए प्रस्थान करती है। परम्परा के अनुसार जात को फिर ईड़ाबधानी से नौटी लौटना पड़ता है। तब जाकर नौटी में स्थापित भगोती नंदा के यंत्र की परिक्रमा पूर्ण होती है और जात चल पड़ती है अपने अगले पड़ाव कांसुवा की ओर। नंदा राजजात के 20 पड़ाव हैं, जिनमें वाण तक के 12 पड़ाव आबादी के बीच से गुजरते हैं। इन सभी पड़ावों पर सैकड़ों डोली-छन्तोलियों का मिलन मुख्य जात से होता है। मिलन का अन्तिम पड़ाव वाण है। इसके बाद जात एकरूप होकर निर्जन पड़ावों से होते हुए होमकुण्ड पहुँचती है। भगोती नन्दा की मायके से ससुराल विदाई की यह परंपरा अपने आप में अनूठी है। इस अलौकिक दृश्य को अन्तर्मन में सहेजकर रखना तो आसान है, लेकिन शब्दों में व्यक्त करना नहीं। प्रो. डी.आर. पुरोहित के अनुसार उत्तराखण्ड में नन्दा दो अवतारों में वास करती है। यह अवतार हैं लोक देवी व शास्त्रीय देवी के। लोक देवी के रूप में नन्दा पहाड़वासियों की धियाण (बहिन-बेटी) है, जबकि शास्त्रीय रूप में महिषमर्दिनी। लेकिन जनमानस ने उसे धियाण के रूप में ही स्नेह मिला। इसी स्नेह की परिणति है 12 साल के अन्तराल में होने वाली श्री नंदा देवी राजजात। नन्दा देवी राज जात भारत के उत्तराखण्ड राज्य में होने वाली एक नन्दा देवी की एक ाार्मिक यात्रा है। माँ नन्दा गढ़वाल के राजाओं के साथ-साथ कुमाऊँ के कत्यूरी राजवंश की इष्ट देवी के रूप में पूजी जाती थी। क्योंकि गढ़वाल और कुमाऊं के लोग माँ नन्दा को अपने इष्ट मानते हैं इसीलिए नन्दा देवी को राजराजेश्वरी कहकर भी सम्बोधित किया जाता है। कुछ लोगों का कहना है कि माँ नन्दा पार्वती की बहन है जबकि वहीं कुछ लोग कहते हैं कि पार्वती ही नन्दा देवी है। महानन्दा कई नामों से प्रसिद्ध हैं जैसे शिवा, सुनन्दा, शुभा नन्दा, नन्दिनी। माँ नन्दा के प्रति पूरे उत्तराखण्ड के लोगों में असीम श्रद्धा है। माँ नन्दा देवी राजजात यात्रा माँ नन्दा के मायके से उनको उनके ससुराल तक भेजने की यात्रा है।

माना जाता है कि पट्टी चाँदपुर और श्री गुरु शीतला माँ नन्दा का मायके है और बान्धण क्षेत्र माँ नन्दा का ससुराल है। माँ नन्दा को उनकी ससुराल भेजने की यात्रा है राजजात। माँ नन्दा को भगवान शिव की पत्नी माना जाता है और कैलास (हिमालय) भगवान शिव का निवास। किवदन्ती के अनुसार एक बार माँ नन्दा अपने मायके आई थी जिसके बाद किन्हीं कारणों से माता 12 वर्षों तक अपने ससुराल नहीं जा पाईं। इसलिए जब 12 वर्ष बाद माँ नन्दा को उनके ससुराल भेजा गया तो मायके वालों ने बड़े हर्षोल्लास के साथ माता को उनके ससुराल भेजा। तब से यह रीत चली आ रही है और हर 12 वर्ष बाद माँ नन्दा देवी राजजात का आयोजन किया जाता है। गढ़वाल राजा शाली पाल को इस यात्रा को शुरू करने और कनक पाल को इस यात्रा को एक भव्य रूप देने का श्रेय दिया जाता है। मान्यताओं के अनुसार प्राचीन काल में भगवान आशुतोष एवं पार्वती कैलाश की ओर जा रहे थे। इसी

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

स्टूडेंट लाइफ साइकल मॉड्यूल

उच्च शिक्षाण संस्थानों में स्तरीय प्रवेश प्रक्रिया के उपरान्त समर्थ पोर्टल पर पंजीकृत प्रत्येक छात्र-छात्राओं को डिजिटल पहचान पत्र उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। समर्थ पोर्टल पर स्टूडेंट लाइफ साइकल मॉड्यूल के माध्यम से छात्र-छात्राओं को विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों की तमरम शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी ऑनलाइन मिलेगी। वहीं, छात्र-छात्राएं स्टूडेंट लर्निंग क्रेडेशियल के माध्यम से परीक्षा, परीक्षाफल, क्रेडिट स्कोर के साथ ही अपनी तमाम शैक्षिक उपलब्धियों की सूचनाएं भी प्राप्त कर सकेंगे। इस नये मॉड्यूल के माध्यम से छात्र-छात्राओं को परीक्षा फार्म, एडमिट कार्ड सहित परीक्षा व प्रवेश सम्बन्धी तमाम सूचनाएं समय से प्राप्त होंगी। इसके माध्यम से नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं को प्रवेश के तुरन्त पश्चात विश्वविद्यालय नामांकन संख्या भी उपलब्ध कर दी गई है जबकि इससे पहले छात्र-छात्राओं को नामांकन संख्या परीक्षा फार्म भरने के उपरान्त ही मिल पाती थी।

राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में उच्च शिक्षा के अन्तर्गत की गई इस पहल का स्वागत होना चाहिये। क्योंकि देखने में आ रहा है जिस प्रकार से शैक्षकिण कार्यों में विश्वविद्यालय-कालेज पिछड़ते जा रहे हैं और उच्चशिक्षा मजाक बनते जा रही है। ऐसे में समर्थ पोर्टल जैसी व्यवस्था जरूरी हो गई है। चूंकि अभी यह शुरुआत है तो कुछ दिक्कतें किसी को हो सकती है परन्तु भविष्य में इससे सुधार ही होगा। समय से परीक्षा, परिणाम और क्रेडिट रिपोर्ट सहित तमाम जानकारी एक क्लिक पर प्राप्त करने का अवसर विद्यार्थी के पास होगा। विज्ञान के चमत्कारी युग में समय से परीक्षाफल न आना या गलतियों के साथ आना सवाल खड़ा करता है।

इसके अलावा सबसे बड़ी जरूरत यह है कि जिस प्रकार बोर्ड परीक्षाओं का समय एकदम निर्धारित होता है, उसी प्रकार उच्चशिक्षा का समय भी तय हो ताकि पिछड़ रहे कालेज और विद्यार्थी पटरी पर आ सकें। सालों साल परीक्षा, सुधार परीक्षा, विशेष सुधार परीक्षा में उलझे कालेज-विश्वविद्यालयों को व्यवस्थित करने के लिये कड़े कदम उठाने जरूरी हैं। वर्तमान में कालेजों की संख्या भी काफी बढ़ चुकी है और पठन-पाठन सहित तमाम अवसरों की तलाश में निकले युवा चाहते हैं कि उन्हें समय पर सटीक जानकारी प्राप्त हो। ऐसे में स्टूडेंट लाइफ साइकल मॉड्यूल उपयोगी है। उच्चशिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत का दावा है कि इससे विद्यार्थियों के लिये सार्थक पहल बताते हुए कह चुके हैं कि इसमें युवाओं को सुगम, गुणवत्तापूर्ण एवं रोजगारपरक शिक्षा के अवसर प्राप्त होंगे। जैसा बताया जा रहा है और लग रहा है उसे देख उम्मीद की जा सकती है कि उच्चशिक्षा में कदम रख रहे युवा समय से जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, प्रवेश और परीक्षाएं समय से होंगी और खिंच रहे शैक्षणिक सत्र पटरी में आ पाएंगे।

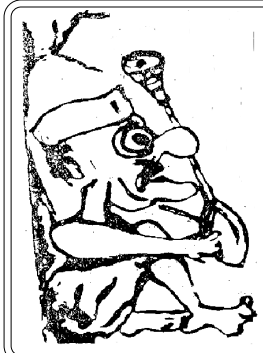

फसक

दाज्यू, भ्रष्ट बनाने वाले भी तो भ्रष्टाचारी ठैरे

लीला और रामलीला का अपना-अपना सीजन होता है बल

दाज्यू, प्रान्तीय नगर उद्योग व्यापार मण्डल हल्द्वानी के नेता विरेन्द्र गुप्ता कह रहे हैं- 'कालाबाजारी और समाज विरोधी कार्यों में लिप्त भ्रष्ट अधिकारियों की सूची केन्द्रीय सतर्कता आयोज व राज्य विजिलेंस को सौंपेंगे। इसके लिये संगठन की समस्त इकाईयों के पदाधिकारियों को उनके इलाके के घूसखोर अधिकारियों की सूची बनाकर वरिष्ठ पदाधिकारियों को देने को कहा गया है।' दाज्यू, किस-किस की सूची दें इन दिनों कालेजों में रूसा के कार्यों की जाँच को लेकर हाहाकार मचा हुआ है। किसको क्या कहें? भ्रष्ट बनाने वाले भी तो भ्रष्टाचारी ठैरे। रेता-बजरी से लेकर कम्प्यूटर-आलमारी तक सरासार कर देते हैं बल। बैड का डबलबैड और लोहे का पीतल हो जाने वाला हुआ। गाज किस पर गिरेगी क्या बताएं। बागेश्वर जिले में तैनात एसडीएम चन्द्रलाल इमलाल और एसडीएम राजकुमार पाण्डे को हटाकर कमिश्नर दफ्तर से अटैच कर दिया। इसे उपचुनाव के बाद गाज गिरना बता रहे हैं। चुनाव के समय सीएम काफिले की जाँच, गाड़ियां सीज वीडियोग्राफी हुई थी बल और प्रोटोकाल का अनुपालन न करने की शिकायत भी। दाज्यू, लीला और रामलीला का अपना-अपना सीजन होता है बल। हमारे गाँव में अभी तालीम चल रही है। आपको न्योता है, जरूर आना। इस बार बिल्लू दा शूर्पनखा का पाठ खेलने वाले हैं। भगतदा और हरदा को भी निमंत्रण भेज रहे हैं। दून में भगतदा भी ठीक ही कह रहे थे- 'राजनीति में कई लोग ऐसे होते हैं जो अन्दर आकर बड़े नेताओं का पांव छूते हैं और ऐसा लगता है जैसे इनसे बड़ा हितैषी कोई नहीं होगा। लेकिन जब बाहर आते हैं तो उसी नेता को गाली देते हैं।' गदरपुर में चल रही बाल रामलीला में सनातन भारत दल के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ.आर.के.महाजन ने कहा- 'रामलीला के पात्रों से शिक्षा लेने की जरूरत है।' हम भी तो यही कह रहे हैं।

दाज्यू, हर प्रकार लीला हो या रामलीला सब तरह के पात्र होने वाले हुए। हल्द्वानी के हरिपुर नायक में प्लाट सौदे में एडवांस के लिए 8.60 लाख रुपये हड़प लिये हैं बल। पीड़ित ने पुलिस में मामला दर्ज करवाया है। बाजपुर के बन्नाखेड़ा में युवक से शादी करके दुलहनिया माल-मत्ता लेकर फरार हो गई। रामलीलाओं के टैम में ऐसा पहले भी हुआ था बल।

कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैक रैंकिंग में पिछड़ गया है बल। दाज्यू, पिछली बार ए ग्रेड मिलने पर मिष्ठान वितरण हुआ था। सरोवर नगरी की रंगत और संगत में नम्बर एक की ही उम्मीद होने वाली ठैरी। साब लोगों का मूड हुआ पता नहीं निरीक्षण-परीक्षण में क्या कम ज्यादा मिल गया इस बार। नैक ग्रेडिंग के बाद विश्वविद्यालय तीसरे स्थान से फिसल कर छठे पायदान पर पहुँच गया है बल। विश्वविद्यालय आपत्ति दर्ज कराने की बात कर रहा है। दाज्यू, क्य्याप हो रहा है। सन्त सोमवारी जीआईसी पदमपुरी में प्रशासनिक अधिकारी हर माह अपने वेतनमान में बढ़ोत्तरी करता रहा बल। अब जाँच चल रही है। काशीपुर के भरतपुर ग्राम में पशु आहार मिल की आड़ में वकील अंग्रेजी शराब की तस्करी कर रहा था बल। कुंडा थाना जसपुर कोतवाली की संयुक्त टीम ने अंग्रेजी शराब की 162 पेटियां बरामद कीं। मिल यशवन्त सिंह चौहान की बता रहे हैं। दाज्यू, मुख्यमंत्री धामी ज्यू का बर्थडे पर अपना रमदा भी खूब नाचा। कह रहा है- 'पटाखों की आवाज अभी तक कान में गूंज रही है।' दाज्यू, कभी-कभार ट्रेन से यात्रा करने वालों को भी रेल की छुकछुक कई रातों तक सुनाई देती है।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

उत्तराखण्ड में......

प्रथम पृष्ठ का शेष

दौरान माँ नन्दा को प्यास लगी और वह निकटवर्ती गाँव बन्धाणि जा पहुँची। जबकि भगवान शंकर सीधे आगे की ओर निकल गए। बन्धाणि गाँव में उस समय के चौकीदार एवं प्रधान जमन सिंह जादोडा ने माँ पार्वती को पानी पिलाने के साथ-साथ उनका खूब आदर सत्कार करते हुए दही और भात खिलाया। विदा होते समय जमन सिंह ने माँ पार्वती से कहा कि कैलाश जाते समय वे एक बार फिर उनके घर जरूर आएं। इसी परम्परा का निर्वहन करते हुए मां श्रीनन्दा राजजात में कैलाश विदा होने से पूर्व इडा बंधानी में जादौड़ा वंशज गुसाईं लोगों के घर माँ नन्दा देवी की डोली रात्रि विश्राम करती है। कुछ लोग माँ नन्दा को पार्वती का रूप मानते हैं और माँ नन्दा की कहानी उस समय की बताते हैं जब पार्वती अपने पिता दक्ष के घर बिना बुलाए गई थी। साथ ही कुछ किवदन्तियां इस तरह भी प्रचलित है कि एक बार एक लड़की के मायके में किसी धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन किया गया लेकिन मायके पक्ष ने अपनी बेटी को इस अनुष्ठान में नहीं बुलाया। लेकिन वह लड़की अपने ससुराल से लड़ झगड़ कर अपने मायके की ओर अनुष्ठान के लिए चल पड़ी। ससुराल पक्ष ने लड़की को बहुत समझाया कि तुम्हारी मायके वालों ने तुम्हें आमंत्रित नहीं किया है इस तरह जाना ठीक नहीं लेकिन लड़की नहीं मानी। लड़की ससुराल से अपने मायके की ओर जा रही थी तभी उसके पीछे एक गुस्सैल भैंस पड़ गई। उससे जान बचाते हुए वह लड़की एक केले के पेड़ के पीछे जा छुपी। इतने में वहाँ एक बकरी आ गई और उसने उन पत्तों को खा लिया जिनके पीछे लड़की छुपी हुई थी गुस्सैल भैंस ने लड़की को देखा और उसे कुछ इस तरीके से मारा कि उसने अपने प्राण त्याग दिए। इसके बाद ससुराल पक्ष को यही लगता रहा कि लड़की अपने मायके में है। और मायके के पक्ष को भी इस बात की कोई खबर नहीं थी कि लड़की अनुष्ठान के लिए अपनी ससुराल से निकल पड़ी थी। जब बहुत समय तक दोनों पक्षों ने लड़की की खोज नहीं की तो लड़की के मायके और ससुराल में कुछ अजीबोगरीब घटनाएं होने लगी। जैसे गाय के पेट से बकरी जन्म लेने लगी लोगों की सारी फसलें खराब हो गई या फिर अलग फसल से अलग अनाज उत्पन्न होने लगा। दोनों पक्ष इस बात से परेशान हो गए कि आखिर ऐसा हो क्यों रहा है। तभी एक दिन वह लड़की किसी के सपने में आई और बताया कि मेरे साथ ऐसी ऐसी घटना हुई और तुम लोगों ने मेरी खोज नहीं की इसलिए तुम्हें मेरी याद दिलाने के लिए मैंने ऐसा किया। कहा जाता है तब से उस लड़की को माँ नन्दा के रूप में पूजा जाता है और देवी बनाया जाता है। आज माँ नन्दा सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में कई जगह बेटी, बहन और कहीं बहू के रूप में पूजी जाती हैं। 12 साल में आयोजित होने वाली नन्दा राजजात में मुख्य रूप से चौशींग्या खाडू (चार सींग वाला बकरा) माँ नन्दा का सहायक माना जाता है। कहते हैं यह चार सिंह वाला बकरा हर 12 वर्ष बाद ही जन्म लेता है। उत्तराखण्ड में माँ नन्दा को अनेक रूपों में पूजा जाता है। उत्तराखण्ड में विवाहिता देखी या बहनों को दिशा ध्याणी कहा जाता है। इसलिए इस राजजात में बेटियों को खास महत्व दिया जाता है। दिशा के रूप में पूजने वाले लोग माँ नन्दा को अन्य धन्य एवं श्रृंगार सामग्री भेंट करते हैं। ससुराल पक्ष से प्राप्त होने वाली सामग्री को लोक देवी प्रसाद के रूप में आपस में बांटते हैं। घाट ब्लाक के कपुरूड, नाटी से लेकर नारायणबगड के भगौती गाँव तक को मां नंदा का मायका माना जाता है। यहाँ माँ नन्दा को बेटी या बहन के रूप में पूजा जाता है। भगौती के बाद माँ नन्दा का ससुराल शुरू हो जाता है। चमोली की नाटी से शुरू होकर कुरूड के मन्दिर से दसौली और बंधाण की डोलिया राजजात का आगाज करती है। इस यात्रा में लगभग 240 किलोमीटर की दूरी नाटी से हेमकुण्ड तक पैदल यात्रा करनी पड़ती है। इस बीच उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों से अनेक छतौलिया इस यात्रा में शामिल होते हैं।

नौटियाल और कुंवर लोग चौसिंग्या खाडू और रिंगाल की छंतौलिया लेकर आते हैं। माँ नन्दा के उपहार को इस बकरे की पीठ पर हेमकुंड तक ले जाते हैं। वहाँ से यह बकरा अकेला ही आगे बढ़ जाता है और कहते हैं यह ठीक कैलाश पर्वत तक जाता है। इस खाडू के जन्म के साथ ही विचित्र चमत्कारिक घटनाएं होने शुरू हो जाती है जिस भी जगह पर या जन्म लेता है उसी दिन से वहाँ शेर आना शुरू कर देता है जब तक इस खाडू का मालिक राजा को अर्पित करने की मनौती नहीं रखता तब तक वहाँ शेर लगातार आता ही रहता है। चौसिंगा खाडू (काले रंग का भेड़) श्री नन्दा राजजात की अगुवाई करता है। मनौती के बाद पैदा हुए चौसिंगा खाडू को ही यात्रा में शामिल किया जाता है। राजजात के शुभारम्भ पर नौटी में विशेष पूजा-अर्चना के साथ इस खाडू के पीठ पर फंची (पोटली) बांधी जाती है, जिसमें माँ नन्दा की श्रृंगार सामग्री सहित देवी भक्तों की भेंट होती है। खाडू पूरी यात्रा की अगुवाई करता है। होमकुंड में इस खाडू को पोटली के साथ हिमालय के लिए विदा किया जाता है। यात्रा का शुभारम्भ नौटी में भगवती नन्दादेवी की स्वर्ण प्रतिमा पर प्राण प्रतिष्ठा के साथ रिंगाल की पवित्र राज छंतोली और चार सींग वाले भेड़ (खाडू) की विशेष पूजा की जाती है। कांसुवा के राजवंशी कुंवर यहाँ यात्रा के शुभारम्भ और सफलता का संकल्प लेते हैं। माँ भगवती को देवी भक्त आभूषण, वस्त्र, उपहार, मिष्ठान आदि देकर हिमालय के लिए विदा करते हैं। राजजात समिति के अभिलेखों के अनुसार हिमालयी महाकुंभ श्रीनंदा देवी राजजात वर्ष 1843, 1863, 1886, 1905, 1925, 1951, 1968, 1987 तथा 2000 में आयोजित हो चुकी है। वर्ष 1951 में मौसम खराब होने के कारण राजजात पूरी नहीं हो पाई थी। जबकि वर्ष 1962 में मनौती के छह वर्ष बाद वर्ष 1968 में राजजात हुई। भारत देश में कई सारी धार्मिक यात्राएं निकाली जाती हैं। इन्हीं में से एक है नन्दा देवी की यात्रा, जो उत्तराखण्ड की ऐतिहासिक धरोहरों में से एक है, जो यहाँ की सांस्कृतिक महक को पूरे भारत में बिखेरे और जनमानस को एक सूत्र में बांधे हुए है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

असमंजस

जोहार की प्रसिद्ध लोकोक्ति 'सैं जौं, बुई जौं'

जगदीश बृजवाल

'कब्बू' अपने परिवार माता-पिता, भाई-बहनों के साथ लिलम मुनस्यारी पिथौरागढ़ के छोटे कस्बे में रहता है। लिलम 'गोरी नदी' के किनारे पहाड़ के तीव्र ढलान में नदी से 10 मी. ऊपर 'चकल ढुंगा' से 100 मी. ऊपर 'रारमैनसिह' टॉप जोहार मार्ग 'पुमद्यो' तक लोगों की बसासत है।

भारत-तिब्बत सीमा का अन्तिम स्थाई बसासत गाँव लिलम जो जोहार घाटी जाने के लिए प्रथम पड़ाव स्थल भी है। पहले यहाँ आर्मी बेरक, पुलिस चौकपोस्ट भी हुआ करता था। कालान्तर में जमीन का धंसाव, भू-स्खलन के कारण मिलम स्थान्तरित कर दिया गया है।

लिलम कस्बे की चहल-पहल तीस-चालीस वर्ष पूर्व की अलग-सी थी, यह बुई-पातों, लिलम, जोहार जाने वाले यात्रियों के लिए मुख्य मार्ग भी था, होटल, दुकानें, सस्ते गल्ले की दुकान, सरकारी गेस्ट हाउस, पोस्ट ऑफिस ऊपर गाँव नीचे कस्बा था।

लिलम में पांगती, गनघरिया, दानू, सुमत्याल, दरियाल जाति के लोग रहते हैं।

गोरखा, शासनकाल में भक्ति थापा 'सुब्बा' (सेनापति) के बाद सैनिकों ने जोहार जाने के लिए लिलम से ही मना कर दिया।

रारमेनसिंह चोटी का अतिदुर्गम रास्ता देखकर हौसले पस्त हो गये, यहीं से वापस जाना पडा। खलकोट ऐतिहासिक काण्ड भी यही से कुछ दूर में हुआ था।

वर्षा ऋतु समाप्ति के बाद पहाड़ों पर खुशनुमा मौसम तथा लोकोत्सवों का लोकजीवन में आना भी शुरू हो जाता है। पहाड़ के गाँव - गाँव में रामलीला, मेला-खेला, मन्दिरों में पूजा-पाठ होना प्रारम्भ हो जाता है। किसान भी धान मडुवा, चीना, कोनी, गहद-भट के कटाई-छंटाई के बाद खेती से कुछ निजात पाकर फुरसत के क्षण मनोरंजन के मूड में खेल-कौतिक में सम्मिलित होना चाहते हैं।

अतीत में आधुनिक समय की तरह मंनोरंजन के साधन सिनेमा, टी.बी. मोबाइल, इंटरनेट जैसी कोई संसाधन भी नहीं था। लोकजीवन पर आधारित लोकोत्सव, मेला, त्योहार, रामलीला, पन्द्रह अगस्त, ड्रामा मंचन जिससे लोग गीत-संगीत, नृत्य, ह्युस्का-चाँचरी, कथा, राग-फाग द्वारा ही मंनोरंजन किया करते थे। असोज माह के दूसरे पखवाड़े से पहाड़ों में मेला, पूजा -पाठ, कार्तिक, मंगशीर में रामलीला की धूम रहती है।

सांई पोलू का महाकाली पूजा बुंई का पहाड़ी रामलीला जिसने देखा होगा आंह .....भरता रहेगा। जिसने देखा नहीं कल्पनातीत....हो जायेगा।

सांई-पोलू जीमी गार से 100 मी. ऊपर पहाड़ी ढलान पर स्थित वह मुख्य जोहार मार्ग से पश्चिम की ओर जमीघाट कस्बे से लगभग ढेड़-दो किमी चढ़ाई पर स्थिति जहाँ टोलीया, लस्पाल, बिष्ट, पाण्डे, पिंडरियाल जाति के लोग रहते हैं। बुंई 'पंनज्वारी' रहलम्वाल लोगों का शीतकालीन बसासत गाँव है तथा गोरी नदी के ऊपरी ढलान पर सुन्दर तथा उपजाऊ गाँव है। लिलम कस्बे से नदी पार एक-ढेड़ किमी दूरी पर स्थित है। लिलम कस्बे से बुई व सांई-पोलू की दूरी लगभग कुछ अन्तर दूरी ही होगी।

कब्बू को बुई की रामलीला देखते दो दिन हो गया। आज उसके मन में विचार आया कि सांई में भी महाकाली का नौर्त हो रहा है (आज अन्तिम रात है क्यों न? वहाँ जाया जाय)।

राजू, कब्बू का दोस्त समीप आते जा रहा.... है।

कब्बू ने कहा- 'अरे राजू, सुन भाई, तुझसे एक बात कहना है।'

'बताओ, क्या कह रहे हो?' 'सुना' कब्बू ने कहा- 'राजू आज बुंई रामलीला में कौन सा दृश्य का मंचन होगा?

राजू, तूने कल क्या देखा? 'दोस्त, मुझे ठीक ढंग से याद नहीं। कल रात तो मैं सोने में ही रह गया था।

अच्छा.....!

राजू ने उत्तर दिया, आज तो बहुत अच्छी रामलीला का मंचन होगा। वनगमन का दृश्य, राम केवट संवाद, फिर राम का पात्र तो क्या गजब गाता है, मित्र।

कब्बू, एक बात कहूँ।

'कह ना, क्या कहना चाहता है?'

'भाई राजू, सांई में महाकाली का नौर्त चल रहा है और आज अन्तिम रात है।'

अभी -अभी आचे(दादी) ने मुझे बताया।

राजू बोला- होने दे, इसमें क्या? हम लोग रामलीला देखने ही जायेंगे। ठीक है।

अच्छा.....कुछ निराशा में कब्बू एक बात कहूँ राजू, रामलीला तो परसु भी देख लेंगे पर सांई का नौर्त का मेला एकदम तुरन्त नहीं देख सकते है। मेरे दोस्त।

अच्छा! जैसा करते हो (अभी नब्बू, श्याम, दिनू से भी बात करते हैं।' तुम जाओ, खाना खाकर चबूतरे में आना फिर करते हैं सलाह मशविरा।'

कब्बू,गरम कपड़े, जूता,टोर्च पकड़कर तैयार चबूतरे में खड़ा है(तभी चारों लोग कब्बू के पास चबूतरे में आ जाते हैं।

श्यामू ने कहा-'कब्बू, तेरा तो कहीं और जाने की योजना बनी है।' ठीक कह रहा हूँ।

श्यामू ,सही कह रहा है।

बिल्कूल ठीक

भाई रामलीला कल भी जा सकते हैं किन्तु सांई में नौर्त केवल आज रात ही है।

जैसा उचित समझो, सबसे पुछ लो।

कुछ देर सभी दोस्त सोच बिचार करने लगे 'सैं जौं , बुंई जौं' तब शब्बू ने कहा- 'सांई नौर्त देखने चलो।'

श्याम बोला, 'कब्बू तेरी चल गयी दोस्त।'

कब्बू अच्छा....! चलो। सबने मान लिया, जै माँ महाकाली, तेरी जय हो।

'वाह ! मजा आ गया।'

'बी.. बी... हुर्रे।'

सबको दो-दो चिगम पकडाते। सांई की ओर चलते बने।

सांई दिखाई देने वाले धार के समतल पत्थर पर कुछ देर विश्राम किया गया।

श्यामू ने कहा- कब्बू, तूने अच्छा किया, देख तो, गाँव व मन्दिर में मेला जैसा माहौल है। वाह !

कुछ ही देर में सभी लोग मन्दिर में पहुँच गये।

मंदिर में खूब भीड़-भाड़ माँ को हाथ जोड़कर श्रद्धा भाव से स्मरण किया, थोड़ी देर धूनी के पास बैठ थे तभी सांई पोलू के दो-तीन दोस्त मिल गये।

वाह! कब्बू कब आया भाई.

हरू, 'अभी-अभी हम पाँच लोग पहुँच ही रहे हैं।' भाई।

अच्छा,चलो ठीक हुआ, आ गये। बुनी रामलीला देखने गए नहीं?

नहीं, हरदा, वहीं तो असमंजस की स्थिति थी।

'चलो, यहाँ आ गये हो।

'मेला तो गाँव में लगता है। वहीं चलें।' चलिए.....वहीं चलें।

गाँव में पहुँचकर कई परिचित लोग मिल गये। गाँव में बड़े-बड़े आंगन में ह्युस्का-चांचेरी, गीत संगीत सभी अलग -अलग ग्रुप में बच्चे, युवा, बुजर्ग लोग मस्त हो रहे थे। हम भी उसमें शरीक हो गये।

ठीक साढ़े बारह, एक बजे के करीब मन्दिर में नगाड़ा-दमो व झांजर की तेज आवाज आने लगी, सभी लोग मन्दिर की ओर प्रस्थान करने लगे। देबी अवतारी महिला में माँ काली आत्मा का प्रवेश हो चुका था। सभी भक्तगण हाथ जोड़कर काली माँ का स्मरण श्रद्धा भक्तिभाव से कुछ मनौती भी मांग रहे थे। परम्परागत विधि-विधान से पुजारी द्वारा माता को दूध, फल-फूल मुहैया करा रहा था, माँ महाकाली लोगों को आशीर्वाद स्वरूप अशीष, फल, फूल, चावल व धूनी की राख का टीका लगा देती, हमें भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। अब माता अपनी वाणी से रूबरू कराकर सबको विषय ज्ञान कराती है शारीरिक कम्पनता समाप्ति के बाद पूर्व अवस्था में आने के बाद समापन हो गया जाता है। हम सभी अपने घर लिलम की ओर आ गये। हमें अपने निर्णय पर अति प्रसन्नता हुई।

इस प्रकार की कहानी असंमजस व ऐतिहासिक लोकोक्ति गढ़ने में पाँच दोस्तों की अहम भूमिका रही हैं जिस कारण सदैव दोनों गाँवों की याद भी हमें युगों -युगों तक आता रहेगा। आखिर 'सैं जौं, बुंई जौं' है क्या?

(लेखक का लेखन लोकोक्ति के विश्लेषण आधरित तथा कहानी के काल्पनिक पात्र में कुछ यथार्थता का दर्शन भी होता है। अन्यथा में न लें)

ज्योतिष की बातें - 145

1 अक्टूबर 2023 को बुध अपनी उच्चराशि कन्या में प्रवेश करेगा । वहाँ पर मित्रग्रह सूर्य और समग्रह मंगल से युति भी करेगा । बुध जिस ग्रह के साथ रहता है उसी ग्रह का ल प्रदान करता है अत: बुध मिश्रित प्रकार के ल प्रदान करेगा । अगले 18 दिन बुध बु), स्मरण शद्रि, व्यापार- वाणिज्य, गणित, लेखन कार्य, वाणी, संचार साधन, पत्र-व्यवहार आदि अपने कारक विषयों में सिंह, मिथुन, मेष, कुम्भ, धनु व वृश्चिक राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ ल प्रदान करेगा । अन्य राशियों को भी बुध सामान्य ल प्रदान करेगा ।

अनन्त चतुर्दशी- उदयव्यापिनी न्यूनतम द्विमुहूर्ता भाद्रपद शुक्लपक्ष चतुर्दशी तिथि तदनुसार गुरुवार 28 सितम्बर 2023 को अनन्त चतुर्दशी का पर्व मनाया जाएगा । इस दिन शेषशायी भगवान विष्णु का पूजन किया जाता है ।

श्रा)पक्ष- आश्विन ख्ष्णपक्ष प्रतिपदा तदनुसार 30 सितम्बर शनिवार से श्रा)पक्ष अर्थात् महालय का प्रारम्भ हो जाएगा । किसी भी तिथि का पार्वण श्रा) अपराह्न व्यापिनी तिथि में किया जाता है इस कारण प्रतिपदा का श्रा) शुक्रवार 29 सितम्बर को ही कर लिया जाएगा । उसके पूर्व पूर्णिमा का श्रा) भी उसी दिन अपराह्न व्यापिनी होने से 29 सितम्बर को ही किया जाएगा ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक् विचार- 36

बच्चे क्या क्या पढ़ें!

आजकल अबोध बच्चों, विशेषकर कक्षा 5 तक के बच्चे अर्थात तीन से दस वर्ष तक के बच्चों को बहुत पढ़ना पड़ता है। पहले दिन से ही अंग्रेजी के पढ़ाई शुरू और अब संस्कृत की भी पढ़ाई शुरू हो चुकी है। कहीं-कहीं तीसरी भाषा भी प्रारम्भ से ही पढ़ाई जाने लगी है। कुछ लोगों का कहना है कि बच्चों को शुरू से ही स्कूलों में नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए। कुछ लोगों का कहना है कि बच्चों को स्कूल में योग की शिक्षा जाए। शारीरिक शिक्षा बच्चों को दी जाए, सेक्स एजुकेशन बच्चों की दी जाए, देशभक्ति की शिक्षा दी जाए। देश में कुछ सम्प्रदाय भी हैं, जिनका नाम मैं लेना नहीं चाहता, वे अपनी सम्प्रदाय की शिक्षाओं को स्कूल के पाठ्यक्रमों में शामिल करवाना चाहते हैं, इसके लिए वे शिक्षा विभाग पर और सरकार पर दबाव बनाते रहते हैं। अब कुछ लोग कह रहे हैं कि रामायण, महाभारत आदि स्कूल के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना चाहिए, तो कोई कह रहा है कि बच्चों को स्कूल में गीता पढ़ाई जानी चाहिए, वेद-पुराणों का अध्ययन कराना चाहिए। आखिर बच्चे कितना पढ़ेंगे! सरकार भी अपनी योजनाओं का प्रचार इन्हीं अबोध बच्चों के माध्यम से करती है। स्वतन्त्रता दिवस हो, गणतन्त्र दिवस हो, वृक्षारोपण दिवस हो, योग दिवस हो, महापुरुष की जयन्ती हो, कोई मन्त्री शहर में आ रहा हो, कोई भी विशेष दिन हो, इन्हीं अबोध बच्चों को चार-पांच घण्टे तक लाइन में खड़ा करके परेशान किया जाता है। यहाँ तक कि शराबबन्दी, नशामुक्ति आदि का प्रचार भी इन्हीं अबोध बच्चों से करवाया जाता है।

जबकि मेरे विचार से इन अबोध बच्चों को परेशान न करते हुए केवल भाषा ज्ञान, व्याकरण की शिक्षा, नैतिक शिक्षा और बौद्धिक विकास के अनुरूप थोड़ा सा गणित का ज्ञान ही कराना चाहिए। क्या कोई ऐसा राजनीतिक दल है जो इस प्रकार हो रहा बच्चों का उत्पीड़न समाप्त करने की बात अपने घोषणा पत्र में रखे?

-सरल

विद्यासागर साहित्य सम्मान वरिष्ठ रचनाकार शोभाराम शर्मा को मिलेगा

देहरादून। वर्ष 2023 का विद्यासागर साहित्य सम्मान वरिष्ठ रचनाकार शोभाराम शर्मा को दिया जायेगा। वहीं सामाजिक क्षेत्र में अनिल स्वामी (थपलियाल) को दिया जायेगा। सम्मान में प्रशस्ति पत्र, मोमेंटो व सम्मान राशि प्रदान की जायेगी। प्रथम विद्यासागर साहित्य सम्मान वरिष्ठ कथाकार सुभाष पन्त को और दूसरा स्व. शेखर जोशी को दिया गया था। यह सम्मान हिन्दी के जानेमाने कथाकार स्व. विद्यासागर नौटियाल की स्मृति में दिया जाता है। विद्यासागर नौटियाल सम्मान समिति और देहरादून के रचनाकारों की संस्था सम्वेदना के तत्वावधान में सम्मान समारोह 29 सितम्बर को देहरादून में होगा। इसमें देश के स्पेनिश भाषा के विशेषज्ञ डॉ. प्रभाती नौटियाल मुख्य अतिथि होंगे। मुख्य वक्ता के रूप में लक्ष्मण बिष्ट बटरोही रहेंगे। बताया गया है कि चयन समिति ने प्रदेश के 9 रचनाकारों के समग्र साहित्य पर चर्चा के बाद शोभाराम के नाम की घोषणा की।

नारायण सिंह बिष्ट संगीत नाटक अमृत अवार्ड से सम्मानित

ग्वालदम। ग्वालदम व आस-पास के क्षेत्रों के प्रसिद्ध जागर गायक नारायण सिंह बिष्ट को भारतीय संगीत नाटक अकादमी का अमृत अवार्ड मिला है। विज्ञान भवन नई दिल्ली में उप राष्ट्रपति के हाथों बिष्ट को सम्मानित किया गया। इस मौके पर उन्होंने जागर गायन भी प्रस्तुत किया। 73 वर्षीय श्री बिष्ट को पुरस्कार के लिये चुने जाने पर पद्मश्री कल्याण सिंह रावत मैती, ग्वालदम के सामाजिक कार्यकर्ता खिलाप सिंह शाह, हरेन्द्र परिहार, गुलाब सिंह रावत ने बधाई दी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दिल्ली में होली पुरानी पेंशन को रैली

देहरादून। पुरानी पेंशन बहाली की मांग को लेकर राष्ट्रीय आन्दोलन की तैयारी हो चुकी है। एक अक्टूबर को एनएम ओपीएस उत्तराखण्ड के प्रान्तीय अध्यक्ष जीतमणि पैन्यूली ने बताया है कि प्रदेश के अधिकारी कर्मचारी, शिक्षक दिल्ली रैली में भाग लेंगे। राज्य में उनके संगठन को 52 से अधिक मान्यता प्राप्त कर्मचारी संगठनों ने समर्थन दिया है।

पहली अक्टूबर से होगी धान खरीद

रुद्रपुर। पहली अक्टूबर से धान खरीद के लिये आरएफसी ने तैयारी कर ली है। इसके लिये धान खरीद वाली एजेंसियों को अपने गोदाम दुरुस्त करने को कहा गया है। किसानों को क्रय केन्द्रों पर धान बेचने के लिये रजिस्ट्रेशन करना जरूरी होगा। उधमसिंह नगर में करीब एक लाख तीन हजार हेक्टेयर में धान की खेती होती है और एक लाख 29 हजार किसान यह खेती करते हैं।

आईएसबीटी हेतु भूमि का निरीक्षण

टनकपुर। क्षेत्र में आईएसबीटी हेतु प्रस्तावित भूमि का उपजिलाधिकारी द्वारा स्थलीय निरीक्षण किया गया। उनके निर्देश पर नगर पालिका द्वारा इस क्षेत्र में सफाई अभियान चलाकर कूड़ा हटाकर मिट्टी भराना कराया गया है।

डाक टिकटों का संकलन सौंपा

पिथौरागढ़। आईटीबीपी की 14वीं वाहिनी के सहायक सेनानी कृष्ण कुमार ने राजकीय संग्रहालय को डाक टिकटों का शानदार संकलन भेंट किया है। देश की स्वतंत्रता के बाद तमाम महत्वपूर्ण अवसरों पर जारी डाक टिकटों से संग्रहालय आने वाले लोगों को महत्वपूर्ण जानकारी मिलेगी।

थरकोट झील का कार्य अंतिम चरण में

पिथौरागढ़। 30 करोड़ की लागत से बन रही थरकोट झील का कार्य अन्तिम चरण में है। 750 मीटर लम्बी 53 मीटर चौड़ी और 15 मीटर गहरी कृत्रिम झील का निर्माण तेजी से हो रहा है। इस झील में नगर के लिये पेयजल योजना भी प्रस्तावित है। भविष्य में इसका निर्माण किया जायेगा।

गंगोलीहाट में सीवर लाइन निर्माण प्रस्ताव

गंगोलीहाट। नगर पालिका ने सीवर लाइन और सीवर ट्रीटमेंट बनाने का प्रस्ताव बोर्ड बैठक में पा कर पेयजल निगम के महाप्रबन्धक को भेजा है। कहा है कि शक्तिपीठ महाकाली की इस भूमि में शौचालय का दूषित पानी रिसकर स्रोतों को दूषित कर रहा है। पिछले वर्षों में कुंजनपुर के जल स्रोतों का पानी पीकर गांव के 80 फीसदी लोग बीमार हो गए थे। ऐसे में सीवर लाइन और ट्रीटमेंट प्लांट का होना जरूरी है।

भूमिधरी अधिकारों के लिए बाजपुर में किसानों का जबर्दस्त प्रदर्शन जारी

बाजपुर। बीस गाँवों की 5838 एकड़ भूमि के भूमिधरी अधिकारों को लेकर संयुक्त किसान मोर्चा के तत्वावधान में जबर्दस्त प्रदर्शन जारी है। मोर्चा द्वारा तहसील परिसर में सत्याग्रह का आयोजन किया गया जिसमें व्यापारी, किसान, मजदूर, महिलाओं, जनप्रतिनिधियों ने आन्दोलन की रणनीति तय करने के साथ ही स्पष्ट कह दिया है कि जब तक उन्हें उनके अधिकार नहीं दिये जाते हैं यह आन्दोलन जारी रहेगा।

भूमि बचाओ मुहिम के संयोजक जगतार सिंह बाजवा व सत्याग्रह के आयोजक रजनीत सिंह सोनू ने पंचायत में शिरकत करने वालों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आन्दोलन की सफलता तक डटे रहने का संकल्प दिलाया। इस दौरान भाकियू के प्रदेश अध्यक्ष कर्म सिंह, व्यापारी नेता निरंजन दास गोयल, हरप्रीत सिंह निज्जर, विक्रम सिंह, गुरुद्वारा साहिब नानकमत्ता के पूर्व अध्यक्ष जसविन्दर सिंह गिल, तुरैहा समाज के हीरा लाल कश्यप, जसपाल सिंह कलसी, गुरप्रीत कौर, सुनीता बाजवा ने सम्बोधन किया।

वनराजि जनजाति ने समस्याएं बताई

पिथौरागढ़। आदिम जनजाति वनराजि के चार गाँवों के लगभग दो दर्जन ग्रामीणों ने जिला मुख्यायलय पहुँच कर आदान-प्रदान कार्यशाला में प्रतिभाग करते हुए अधिकारियों को के समक्ष अपनी समस्याएं रखीं और उनके निराकरण की मांग की।

वनराजि जनजाति के लोगों ने अधिकारियों के सम्मुख श्रमिक कार्ड और पीएम किसान सम्मान निधि के लिए आवेदन किया। जनजाति उत्थान के लिए कार्य कर रही अर्पण संस्थान की परियोजना समन्वयक खीमा जेठी की पहल पर चार वनराजि गाँवों के बीस राजि महिलाएं और तीन पुरुषों ने विकास भवन सभागार में मुख्य विकास अधिकारी वरुण चौधरी को अपनी समस्याएं बताई। इन समसयाओं में जौलजीवी में स्वीकृत प्राथमिक स्वास्य केन्द्र का संचालन, निधि कार्ड और किसान सम्मान निधि प्रदान करने, जौलजीवी के आधार केन्द्र को सुचारू ढंग से चलाने की मांग की गई। कार्यशाला में सम्बन्धित विभागीय अधिकारियों द्वारा जनजाति समाज के लिए चलाई गई सरकार की योजनाओं की विस्तार की जानकारी दी गई। कार्यशाला में विभिन्न विभागीय अधिकारी भी मौजूद थे।

जौलजीवी में सुरक्षा दीवार की मांग

जौलजीवी। अन्तर्राष्ट्रीय मेला स्थल जौलजीवी में गोरी नदी पुल तक सुरक्षा दीवार बनाते हुए छोटे वाहनों के लिये हल्का वाहन मोटर मार्ग बनाने की मांग उठाई गई है। इसके लिये जिलाधिकारी को ज्ञापन भी भेजा गया है।

ज्ञापन में जौलजीवी वासियों ने कहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय मेला स्थल दांतू, दूती का नदी किनारे स्थित स्थल खतरे में है। इससे मेला स्थल भी खतरे से घिरा है। इस मसले पर पूर्व में भी सुरक्षा दीवार की मांग की जाती रही है। मेला स्थल से गारी नदी पुल तक सुरक्षात्मक स्थाई तटबन्ध निर्माण करने, मेला स्थल का सौन्दर्यीकरण करने, काली और गोरी नदी संगम के मेला स्थल तक सड़क निर्माण होना बहुत जरूरी है। बीते वर्ष सीएम ने भी सौन्दर्यीकरण की घोषणा की थी परन्तु अभी तक कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ है।

दमुवाढूंगा पर सरकार से जवाब मांगा

हल्द्वानी। हाईकोर्ट ने दमुवाढूंगा वासियों को मालिकाना हक देने सम्बन्धी जनहित याचिका पर सुनवाई के बाद राज्य सरकार से चार सप्ताह में जवाब दाखिल करने के निर्देश दिये हैं। हाईकोर्ट ने इस प्रकरण में नगर निगम हल्द्वानी को पक्षकार बनाने के आदेश दिये हैं।

कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता दीपक बल्यूटिया निवासी पॉलीशीट ने हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर कर दमुवाढूंगा वासियों को मालिकाना हक देने की मांग की थी। श्री बल्यूटिया ने बताया कि हाईकोर्ट में दायर जनहित याचिका में कहा है जवाहर ज्योति दमुवाढूंगा 650 एकड़ में फैला हुआ है। यहाँ 7 हजार से अधिक परिवार रहते हैं। 6 जुलाई को यहाँ ग्राम पंचायत का गठन हुआ। उस समय यह क्षेत्र आरक्षित वन श्रेणी में आता था। इस कारण बन्दोबस्ती नहीं हो सकी। तत्कालीन कांग्रेस सरकार में 30 दिसम्बर 2015 को इस क्षेत्र को आरक्षित वन क्षेत्र से अनारक्षित भूमि में परिवर्तित किया गया था।

नोटिफाइट क्षेत्र कम दिखाने पर विरोध

रानीखेत। छावनी परिषद से सिविल एरिया को अलग करने की मांग तेज हो चुकी है। रानीखेत-चौखुटिया नगर पालिका परिषद में विलय करने की यह मांग लम्बे समय से जारी है। इसके लिये बराबर धरना प्रदर्शन कर रही रानीखेत विकास संघर्ष समिति ने प्रशासन की ओर से नोटिफाइट एरिया कम दिखाने का विरोध किया है।

संघर्ष समिति ने संयुक्त मजिस्ट्रेट को ज्ञापन देकर पूर्व नोटिफाइट से कम एरिया नामंजूर करते हुए कहा है कि बैठक में जनप्रतिनिधियों को जिस नोटिफाइट एरिया का प्रस्तावा दिखाया गया था उसे ही लागू किया जाना चाहिये। समिति ने ज्ञापन में कहा है कि नोटिफाइट एरिया को कम किया जाना जनहित में नहीं है। समिति इसका विरोध करेगी। शासन को आख्या भेजने से पहले प्रस्ताव में नागरिकों की मांग के अनुरूप एरिया को शामिल करना चाहिये।

डीडीहाट में आन्दोलन जारी है

डीडीहाट। सीएचसी डीडीहाट की व्यवस्थाओं में सुधार करने की मांग को लेकर एक माह से अधिक समय से लगातार धरना प्रदर्शन हो रहा है। आन्दोलनकारियों ने कहा है कि जब तक व्यवस्थाएं नहीं सुधर जाएंगी यह आन्दोलन जारी रहेगा।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में डिजिटल सक्सरे महित तीन सूत्री मांगों को लेकर चल रहे सर्वदलीय समिति के आन्दोलन में संयोजक राजेन्द्र बोरा ने कहा कि सरकार ने क्षेत्र की घोर उपेक्षा की है। आन्दोलन को कांग्रेस सहित अन्य संगठनों का समर्थन मिल रहा है। कहा है कि लम्बे आन्दोलन के बाद अब जेल भरो आन्दोलन व बाजार बन्दी सहित अन्य रणनीति भी अपनाई जायेगी। चिल्ड्रन पार्क में जारी धरने में ममता रावत, रुक्मिणी देवी, नन्दी देवी, द्रोपदी चौहार, प्रकाश बोरा, बलवन्त कठायत, राजेन्द्र चौहान, ललित चुफाल, रविन्द्र बोरा, गीता विश्वकर्मा, हिमांशु चुफाल, विक्रम दानू, मनोरमा महरा सहित तमाम लोग बैठे।

टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन का सर्वे पूरा

टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन का सर्वे कार्य पूरा हो चुका है। इस रेल लाइन की मांग पिछले एक दशक से हो रही है लेकिन सर्वे के नाम पर मात्र घोषणाएं हो रही थी। अब पूर्वोत्तर रेलवे ने टनकपुर से बागेश्वर तक 249 किमी रेल लाइन के लिए सर्वे पूरा कर लिया है और रिपोर्ट रेलवे बोर्ड के पास है। सीएम पुष्कर धामी का कहना है कि वह प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिये संकल्पबद्ध हैं। प्रधानमंत्री मोदी के कुशल नेतृत्व में यह सर्वे कार्य भी हो चुका है।

तीन पदों पर उपचुनाव ५ को

चम्पावत। जिले में रिक्त पड़े ग्राम प्रधान के तीन व 167 ग्राम पंचायत सदस्यों के पदों पर उप चुनाव 5 अक्टूबर को होंगे। इनकी मतगणना 7 अक्टूबर को होगी। जिलाधिकारी/ जिला निर्वाचन अधिकारी नवनीत पाण्डे ने बताया है कि 7 अक्टूबर को प्रातः 8 बजे से मतगणना होगी।

परिक्रमा

केदारनाथ के तीर्थ पुरोहितों में आक्रोश

रुद्रप्रयाग। केदारनाथ आपदा में प्रभावित तीर्थ पुरोहितों को 2023 में भूमिधर अधिकार के तहत भवन नहीं दिये जाने और खड़े भवनों में छेड़छाड़ किये जाने से तीर्थ पुरोहितों में आक्रोश है। विरोध में दो दिन तक यात्रा पड़ज़व के समस्त बाजार बन्द कर दिये। व्यापार संघ अध्यक्ष चण्डी प्रसाद तिवारी ने कहा कि सरकार की गलत नीतियों के खिलाफ यह प्रदर्शन किया गया।

उत्पीड़न बर्दाश्त नहीं होगा : उक्रांद

रुद्रप्रयाग। उत्तराखण्ड क्रान्तिदल के केन्द्रीय मीडिया प्रभारी मोहित डिमरी ने कहा कि तुंगनाथ घाटी में 13 सितम्बर की घटना इतिहास में दर्ज हो गई है। रोजगार कर रहे मूल निवासियों को खदेड़ने आई प्रशासन और वन विभाग की टीम को महिलाओं ने खदेड़ दिया। उक्रांद का ऐलान है कि किसी भी उत्तराखण्डी का उत्पीड़न बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नैनीताल : अतिक्रमण हटाना फिल रुला गया

नैनीताल। शहर में स्वास्थ्य विभाग की भूमि पर हुए अतिक्रमण हटने-हटाने की प्रक्रिया फिर से रुला गई। चाहे जैसे भी हो एक बार जम-जमाव कर चुके लोगों का हटना पीड़ादायक तो होता ही है। ऐसा ही नैनीताल में हुआ। स्वास्थ्य विभाग की जमीन पर प्रशासन की सख्ती के बाद लोग अपने बने हुए आशियाने तोड़ने लगे और रहे-बचे ध्वस्त कर दिये गये। इस दौरान स्थानीय लोगों ने प्रशासन की कार्रवाई का विरोध भी किया। उनका कहना था कि करीब 40 साल से इस जमीन पर रह रहे हैं। जिसका उनके पास मालिकाना अधिकार है इसके बावजूद उन्हें जमीन से बेदखल किया जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग जिस भूमि को अपना बता रहा है वहाँ सैकड़ों घर बनने तक स्वास्थ्य विभाग ने भूमि पर अपना दावा पेश नहीं किया। ना ही क्षेत्र में निर्माण कार्य रुकवाने को लेकर कभी कार्रवाई की। अब क्षेत्र में सैकड़ों परिवार अपने घर बनाकर रहने लगे हैं तो उनके बाद स्वास्थ्य विभाग अचानक जमीन को अपना बताते हुए उन पर कार्रवाई करने लगा। दूसरी ओर स्वास्थ्य विभाग एकदम सख्त होकर 1.46 एकड़ भूमि पर हुए अतिक्रमण को हटाने के लिये जुटा रहा। हाईकोर्ट और जिला प्रशासन के आदेश के बाद अधिकांश ने स्वयं ही अपना सामान हटा लिया था।

अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही के समय भारी पुलिस बल के साथ 5 दर्जन से अधिक मजदूर व पिकअप जुटे रहे। अपने सपनों का घर टूटता देख लोग बहुत रोए। तोड़फोड़ के समय कबाड़ी भी अपनी दुकानदारी को पहुँच गये थे।

प्रो. तितियाल को इंग्लैंड में एफआरसी की डिग्री

धारचूला। तिदांग गाँव निवासी प्रो. जीवन सिंह तितियाल को लन्दन (इंग्लैंड) स्थिल रायल कालेज आफ आपथ्रोमोलाजी (एफ आरसी) की डिग्री प्रदान की गई है। पद्मश्री प्रो. तितयाल वर्तमान में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) नई दिल्ली में आप्थोमोलाजी के चीफ पद पर कार्यरत हैं।

लन्दन कालेज की ओर से सर्जरी के क्षेत्र में दी जाने वाली प्रतिष्ठित फैलोशिप से सम्मानित होने पर प्रो. तितियाल के गृह जनपद में खुशी मनाई गई। इनके छोटे भाई डॉ. गोविन्द सिंह तितियाल राजकीय मेडिकल कालेज हल्द्वानी में नेत्र विभाग के अध्यक्ष हैं।

हल्द्वानी में विधायक सुमित जनता के बीच सक्रिय

जनमुद्दों को लेकर लगातार सरकार पर हमलावर बने हुए हैं

हल्द्वानी। विधायक सुमित हृदयेश अपने विधानसभा क्षेत्र में जनमुद्दों को लेकर लगातार सक्रिय दिखाई दे रहे हैं। कई मामलों पर उन्होंने सरकार पर धरना प्रदर्शन सहित हमला बोला है। सुमित की इस सक्रियता के पीछे सीधा सा कारण यह भी है कि भाजपा के दबदबे आगे यदि वह मौन रह गये तो जनता उन्हें नकार देगी। प्रदेश की सबसे अनुभवी और दबंग नेता रही स्व. इन्दिरा हृदयेश की सी छवि सुमित की नहीं है लेकिन जनता के बीच सक्रिय रहकर ही वह अपनी पूज्य माता जी के सपनों को साकार कर सकते हैं। यही कारण है सुमित युवाओं से लेकर बुजुर्गों तक के आन्दोलनों में दिखाई दे रहे हैं और शहर के मसलों पर सरकार को घेर रहे हैं।

नगर निगम के कार्यों को लेकर वह लगातार कांग्रेस के पार्षदों के साथ आक्रामक दिखाई देते हैं। मेयर डॉ. जोगेन्द्र रौतेला और इनके बीच बाकयुद्ध व बयानबाजी तीखी होती रही है। सुमित का कहना है कि वह शहर के विकास के लिये आई धनराशि का हिसाब जानना चाहते हैं कि आखिर किस मद से कहाँ पर कार्य हो रहा है। इस बीच उन्होंने हल्द्वानी की बदहाल सड़कों को लेकर कांग्रेसियों के साथ जबर्दस्त प्रदर्शन किया। कहा कि सड़कों के गड्डों में गिरकर लोग जान गंवा रहे हैं और भाजपा लोक सभा चुनाव की तैयारी में लगी हुई है। मुखानी क्षेत्र में गड्डे के कारण शिक्षक की मौत के लिये उन्होंने धामी सरकार को जिम्मेदार बताते हुए कहा कि पहाड़ के प्रवेश द्वार हल्द्वानी का हाल ही बुरा है तो अन्य जगह क्या हो रहा होगा?

स्मृतियां

डीडीहाट में महिला जागरुकता की मिशाल थीं दमयन्ती पांगती

डीडीहाट। स्व.दमयन्ती पांगती को उनकी चतुर्थ पुण्यतिथि पर श्रद्धासुमन अर्पित किये गये। उल्लेखनीय है कि श्रीमती पांगती डीडीहाट में महिला जागरुकता की मिशाल थीं। नगर पंचायत की अध्यक्ष रहीं श्रीमती दमयन्ती पांगती का 11 सितम्बर 2019 की प्रातः देहरादून में इलाज के दौरान निधन हो गया। 66 वर्षीय दमयन्ती क्षेत्र की चहकती आवाज थीं। धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक किसी भी कार्य के लिये वह सबसे आगे रहने वाली थीं। सामाजिक व्यवहारिकताओं को समझते हुए वह सूझबूझ से काम लेती और हमेशा समाज को जोड़ने के लिये जूझती रहीं। जोहार महिला संगठन की अध्यक्ष के रूप में वह नित कताई बुनाई, सांस्कृति कार्यक्रमों को अंजाम देती थी। उनकी आड़ में समाज की तमाम महिलाएं एकजुटता के साथ रहीं। धार्मिक आयोजनों से लेकर संगीत रसिक होने के कारण वह इस दिशा में भी सक्रिय थीं। जिस दिगतड़ (डीडीहाट) में वर्तमान में नन्दा महोत्सव का वृहद स्वरूप दिखाई दे रहा है। उसे आकार देने में इनका बड़ा योगदान है। पांगती परिवार ने स्थानीय नन्दा मन्दिर में परम्परागत रूप से होने वाली पूजा के अलावा इस आयोजन में समाज के तमाम लोगों को जोड़ते हुए सांस्कृतिक गतिविधियों की शुरुआत की थी। स्व.दमयन्ती नवोदित कलाकारों को प्रोत्साहित करती और उन्हें सहायता करती थीं।

चतुर्थ पुण्यतिथि

स्व. दमयन्ती पांगती

15.7.53 - 11.9.2019

आपकी ममतामयी छांव और मार्गदर्शन में घर-परिवार को संवारने के अलावा सामाजिक सरोकारों का जो संकल्प था, उन सपनों को साकार करने के लिये दृढ़ता के साथ आपकी चतुर्थ पुण्यतिथि पर श्रद्धापूर्ण नमन।

दुष्यन्त सिंह पांगती (पति), दिवाकर सिंह पांगती (पुत्र), श्रीमती अंजू पांगती (बहू), अभिनव पांगती (पुत्र), श्रीमती आशा पांगती (बहू), समस्त परिजन

पांगती पुस्तक भण्डार डीडीहाट

चम्पावत जिले का २७वां जन्मदिन

यूकॉस्ट के सहयोग से आदर्श जिला बनाएंगे

चम्पावत। जिले को 27वां जन्मदिन मनाया गया। सरकारी व व्यक्तिगत प्रयासों से कई आयोजन देखने को मिले। डीएम नवनीत पाण्डे की अध्यक्षता में जिला सभागार में आयोजित कार्यक्रम में नोडल एजेंसी यूकॉस्ट (उत्तराखण्ड विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान) के महानिदेशक प्रो. दुर्गेश पन्त के साथ ही इसरो सहित विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों ने प्रतिभाग कर आदर्शन चम्पावत के लिये वैज्ञानिक संस्थानों की ओर से कराए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। डीएम ने सभी को जिले के 27वें जन्मदिन पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सभी के सहयोग से जिले को आदर्श चम्पावत बनाया जायेगा। बैठक में जनप्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

रोजगार व पर्यटन बढ़ाएगी मानसखण्ड योजना : रावत

हल्द्वानी। मण्डलायुक्त दीपक रावत ने मिनी स्टेडियम रोड स्थिज्ञत कार्यालय में पर्यटन विकास परिषद की स्वदेश दर्शन (मानस खण्ड) योजना की समीक्षा की। कार्यदायी संस्था ने प्रजेंटेशन के जरिए बताया कि इस योजना से चम्वापत व पिथौरागढ़ में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटक स्थलों का कायाकल्प किया जायेगा। साथ्ज्ञ ही लोगों को स्वरोजगार से जोड़ा जायेगा।

मण्डलायुक्त श्री रावत ने बताया कि हेरिटेज सर्किट के अन्तर्गत बैजनाथ, जागेश्वर, कटारमल, देवीधुरा, गुंजी में काम होने हैं। इन जगहों पर पर्यटकों के लिये मुख्य प्रवेश द्वार निर्माण, पार्किंग, जन सुविधा केन्द्र, पैदल मार्ग निर्माण, विद्युत, व्यू प्वाइंट, रेलिंग बनाई जाएगी। खेलों को बढ़ावा देने के लिये ग्रामीण क्रीड़ा प्रशिक्षण केन्द्रों का निर्माण होगा।

हीपा के ग्रामीणों का सड़क को लेकर संघर्ष का ऐलान

बेरीनाग। विकासखण्ड के दूरस्थ क्षेत्र हीपा के ग्रामीणों ने सड़क की मांग को लेकर संघर्ष का ऐलान कर दिया है। पूर्व सैनिक व सामाजिक कार्यकर्ता दिनेश सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में ग्रामीणों ने कहा कि आजादी के 74 साल बाद भी आज तक गाँव को सड़क की सुविधा से वंचित किया गया है। डबल इन्जन सरकार में ग्रामीण सड़क के लिए मोहताज हो गये हैं। सड़क नहीं होने से गाँव से लगातार पलायन हुआ है। पूर्व प्रधान गोविन्द सिंह ने कहा कि सड़क जैसी मूलभूत आवश्यकता से ग्राम वंचित है। ऐसे में अचानक बीमार पड़ने और दुर्घटना होने पर अस्पताल तक पहुँचने से पहले ही मरीजों की मौत हो चुकी है। गर्भवती महिलाओं को प्रसव के लिए तीन माह पूर्व में कमरा लेकर बेरीनाग या पिथौरागढ़ रहना पड़ता है। पूर्व सैनिक लक्ष्मण सिंह कार्की ने कहा कि जब तक सड़क का निर्माण कार्य नहीं होता है तब तक चुप नहीं बैठेंगे और सड़क निर्माण के लिए एक संघर्ष समिति गठित कर आन्दोलन किया जायेगा। लोक सभा चुनाव से पूर्व सड़क निर्माण शुरू न होने पर चुनावों का बहिष्कार किया जायेगा। बैठक में जिला पंचायत सदस्य नन्दन बाफिला ने कहा कि लोनिवि और वन विभाग के अधिकारियों से सड़क निर्माण कार्य की जानकारी ली जायेगी और शीघ्र सड़क बनाने का प्रयास किया जायेगा। बैठक में दिनेश सिंह, आन सिंह, पप्पू कार्की, कृपाल सिंह, अर्जुन सिंह थे।

मडुवा, झिंगोरा समेत १८ उत्पादों को जीआई टैग मिलेगा

देहरादून। स्थानीय उत्पादों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए प्रदेश में 17 से 21 नवम्बर तक भौगोलिक संकेतांक (जीआई) महोत्सव का आयोजन किया जायेगा। इसके लिये प्रदेश सरकार ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। इसी क्रम में मडुवा, झिंगोरा समेत 18 उत्पादों को जीआई टैग मिलेगा।

कृषि मंत्री गणेश जोशी ने जीआई महोत्सव की तैयारियों को लेकर बैठक में अधिकारियों को समन्वय समिति बनाकर कार्य करने के निर्देश दिए। कहा कि कृषि, बागवानी, नाबार्ड, उद्योग, सांस्कृतिक विभाग, सहकारिता, ग्राम्य विकास, पर्यटन विभाग के सहयोग से महोत्सव को भव्य बनाया जायेगा। इसमें केन्द्र सरकार की आरे से उत्पादों के प्रमाण पत्र जारी किये जायेंगे। मंत्री ने महोत्सव में कृषि विश्वविद्यालय पन्तनगर को शामिल करने के निर्देश दिये।

केन्द्र सरकार के जीआई रजिस्ट्री विभाग की ओर से देहरादून में होने वाले इस महोत्सव में छात्र-छात्राओं को जीआई टैग से सम्बन्धित प्रतियोगिता और रैली निकाली जाएगी। राज्य के जिन 18 स्थानीय उत्पादों को जीआई टैग मिलेगा, इसके लिये प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। इसमें मडुवा, झंगोरा, काला भट्ट, लाल चावल, गहत, माल्टा, चौलाई, रामदाना, तोर दाल, बुरांश शरबत, आड़ू, लीची, बेरीनाग चाय, नेटल फाइबर, नैनीताल की मोमबत्ती, कुमाउंनी पिछौड़ा, चमोली का मुखौटा, काष्ठ कला शामिल हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नन्दाष्टमी की शुभकामनाओं के साथ-

महेश बराल

टकाना रोड, मुख्य बाजार

पिथौरागढ़

कल्याण सिंह धानिक

कुंजनपुर

गंगोलीहाट

तारा पांगती शोध सलाहकार परिषद की सदस्य

अपनी लगन से सामाजिक कार्यों में अग्रणीय रही हैं

पन्तनगर। सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती तारा पांगती को जनरल बिपिन रावत पर्वतीय विकास शोध शिक्षालय की शोध सलाहकार परिषद का सदस्य नामित किया गया है। पर्वतीय समाज के समग्र विकास की अवधारणा को क्रियाशील करने एवं पर्वतीय विकास आधारित शोध परिकल्पनाओं को मूर्त रूप देने के उद्देश्य से कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह चौहान द्वारा पर्वतीय विकास की अवधारणा प्रस्तुत की गई जिसके क्रियान्वयन के रूप में पन्तनगर विश्वविद्यालय में जनरल बिपिन रावत पर्वतीय विकास शोध शिक्षालय की स्थापना की गई है। यह शोध शिक्षालय पर्वतीय कृषि एवं सामाजिक जन-जीवन के समग्र विकास हेतु विश्वविद्यालय की परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों का समन्वयन करने के साथ-साथ पर्वतीय क्षेत्रों में आवासित जनसमुदाय की आजीविका संवर्धन, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं सामाजिक व आर्थिक विकास हेतु सम्बन्धित सामूहिक प्रयासों को गति देने का कार्य करेगा। सामाजिक कार्यों व कुटीर उद्योगों में अग्रणीय भूमिका निभाने वाली बूंगा, मुनस्यारी निवासी तारा पांगती के वृहद अनुभव को देखते हुए उन्हें इस परिषद का सदस्य नामित किया गया।

मानचित्र में दर्शाया पार्क गायब

देवकी बिहार कालोनी वासियों ने ज्ञापन सौंपा

हल्द्वानी। बिठौरिया नम्बर-1 स्थित देवकी बिहार कालौनी के लोगों की ओर से संयुक्त हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन विकास प्राधिकरण के संयुक्त सचिव एवं नगर मजिस्ट्रेट को दिया गया। ज्ञापन मे कालौनी के स्वीकृत मानचित्र (ले आउट) में दर्शित पार्क की भूमि को कालौनी वासियों को दिलाये जाने की मांग की है। संयुक्त सचिव ऋचा सिंह ने देवकी बिहार विकास समिति के प्रतिनिधियों को आश्वस्त किया कि वे स्वंय शीघ्र ही मौका मुआयना करेंगी और मामलें में ठोस कार्यवाही की जायेगी।

देवकी बिहार विकास समिति के महासचिव रमेश चन्द्र पाण्डे एवं कोषाध्यक्ष बहादुर सिंह हरडिया ने आज विकास प्राधिकरण की संयुक्त सचिव एवं नगर मजिस्ट्रेट ऋचा सिंह से भेंटकर उन्हें देवकी बिहार कालौनी के 34 लोगों द्वारा हस्ताक्षरित एक ज्ञापन सौंपा। संयुक्त हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन में कहा गया है कि यहाँ जमीन खरीदते समय बिजली, पानी, सड़क जैसी बुनियादी सुविधाओं के अलावा उन्हें यह भी बताया गया था कि कालौनी में एक पार्क भी है। अब कालौनी में अधिकांश मकान बन जाने के बाद जब लोग पार्क की जमीन के बारे में आपस में पूछताछ कर रहे हैं तो पार्क की भूमि का कहीं अतापता नहीं है।

ज्ञापन में कालौनीवासियों ने उक्त परिस्थिति में कालौनी के स्वीकृत मानचित्र (ले आउट) के अनुसार पार्क के लिए चिन्हित भूमि को कालौनीवासियों को दिलाने का अनुरोध किया है। उल्लेखनीय है कि तकरीबन वर्ष 2004 से लोगों ने इस कालौनी में जमीन खरीदनी शुरु की थी। धीरे धीरे यहाँ मकान बनने शुरु हुए। बर्तमान में यहाँ 43 मकान बन गये हैं। गत दिनों देवकी बिहार विकास समिति की बैठक में कालौनी के पार्क का मुद्दा जोर शोर से उठा था। सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित हुआ था कि इस मामले को स्थानीय प्रशासन और विकास प्राधिकरण के संज्ञान में लाया जाए।

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स
बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते- जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)